बृहत्पाराशर होराशास्त्र के अनुसार ग्रह स्वरूप वर्णन, ग्रहादि साधना एवं राशियों के स्वरूप आदि का विवेचनात्मक अध्ययन

[1]Narayan Kumar Jha

[1]Assistant Professor,
[1]Department of Sanskrit,
[1]R. B. Jalan Bela College, , Darbhanga (Bihar) - 846004

Abstract : सूर्य या किसी अन्य तारे के चारों ओर परिक्रमा करने वाले खगोलपिण्डों को ग्रह कहते हैं। अंतरर्राष्ट्रीय खगोलीयसंघ के अनुसार हमारे सौरमंडल में आठ ही ग्रह हैं। प्राचीन खगोलशास्त्रियों ने तारों और ग्रहों के बीच में अन्तर इस प्रकार से किया कि रात में आकाश में चमकनेवाले अधिकतर पिण्ड हमेशा पूरब दिशा से उठते हैं, एक निश्चित गति को प्राप्त करते हैं और पश्चिम की दिशा में अस्त होते हैं। इन पिण्डों का आपस में एक दूसरे के सापेक्ष भी कोई परिवर्तन नहीं होता है। इन पिण्डों को तारा कहा जाता है। पर कुछ पिण्ड ऐसे भी हैं जो बाकि पिण्डों के सापेक्ष में कभी आगे और कभी पीछे हो जाते हैं । प्लानेट एक लेटिन शब्द है, जिसका अर्थ होता है इधर उधर घूमने वाला। इसलिये इन घुमक्कड़ पिण्डों का नाम अंगेजी में प्लानेट और हिन्दी में ग्रह रखा गया है। महर्षि पराशर ने ग्रहों को जन्मरहित परमात्मा का अवतार माना है :–

अवताराण्येकानि हृयजस्य परमात्मनः।
जीवनां कर्मफलदो ग्रहरूपी जनार्दनः।। [1]

उनके अनुसार नो अवतारों के अलावा जितने अवतार हैं वो सभी ग्रह ही हैं[2]। जिन अवतारा में परमात्मांश अधिक है वे सभी *खेचर* कहलाते हैं। अतः, उन खेचरादि अवतारों को विस्तार से जानना ही इस अध्ययन का प्रमुख औचित्य है।

IndexTerms *- खेचर, नवग्रह, प्लानेट, खगोल।*

वराहमिहिर का मानना है कि कालपुरूष के शरीर के सभी भाग ही ग्रह हैं। उन्होंने कालपुरूष का **आत्मा** सूर्य को, **मन** चन्द्रमा को, **बल** भौम को, **वाणी** बुधको, **ज्ञान** और **सुख** बृहस्पति को, **काम** शुक्र को और दुख शनि को माना है।[3] भारतीय ज्योतिष में ग्रहों की संख्या नौ मानी गई है, जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं[4] – (१) सूर्य, (२) चन्द्र (३) मंगल (४) बुध (५) गुरू या बृहस्पति (६) शुक्र (७) शनि (८) राहु और (९) केतु । इन नव ग्रहों में से केवल सात ग्रहों के पिण्ड ही आकाश में दिखाई देते हैं। राहु तथा केतु के छाया – ग्रह होने की स्थिति में भ–चक्र में इनके नाम का कोई पिण्ड नहीं है।

इसके अलावा विज्ञान जगत में अनुसंधानित यूरेनस, नेप्च्यून तथा प्लूटों के लिए भारतीय ज्योतिष शास्त्र में कोई स्थान नहीं है। ग्रहों के नामों के व्याख्या करने के क्रम में वराहमिहिर ने अलग ही चर्चा की है जिसे कि हम निम्न तालिका के द्वारा काफी बढ़िया से समझ सकते हैं :–

हेलिः सूर्यश्चन्द्रमा शीतरश्मि र्हेम्ना विद् ज्ञो बोधनश्चेन्दुपुत्रः।
आरो वक्रः क्रूरदृक् चावनेयः कोणो मन्दः सूर्यपुत्रोऽसितश्च ।।
जीवोऽंगिराः सुरगुरूर्वचसांपतीज्यौ शुक्रौ भृगुर्भृगुसुतः
सित आसुजिच्च राहुस्तमोऽगुरसुरश्च शिखिति केतुः पर्यायमन्युपलभ्य वदेच्च लोकात्। [5]

---

1 बृहत्पाराशरहोराशास्त्र, अवतारक्रमवर्णनाध्याय, श्लोक संख्या – 4, पृष्ठ संख्या – 8।

2 ..... ये चान्ये तेऽपि खेटजाः।
परात्मांशोऽधिको येषु ते सर्वे खेचराभिधाः।।
– बृहत्पाराशरहोराशास्त्र, अवतारक्रमवर्णनाध्याय, श्लोक संख्या – 7, पृष्ठ संख्या – 8।

3 कालात्मा दिनकृन्मनश्चहिमगुः सत्वं कुजो ज्ञो वचो जीवो ज्ञानसुखे सितश्च मदनो दुःखं दिनेशात्मजः।
राजानौ रविशीतगू क्षितिसूतो नेता कुमारो बुधः सूरिर्दानव सचिवः प्रेष्यः सहस्रांशुजः।।
– बृहज्जातक होराशास्त्र, वराहमिहिर, ग्रहप्रभेदाध्याय 2, श्लोक संख्या – 1, पृष्ठ संख्या – 34।

4 भृगु संहिता, फलित प्रकाश, प्रेम कुमार शर्मा, पृष्ठ संख्या 67।

5 बृहज्जातक होराशास्त्र, वराहमिहिर, ग्रहप्रभेदाध्याय 2, श्लोक सं0 – 2–3, पृ0 सं0 – 35–36।

ग्रहों के नाम	संस्कृत	अंग्रेजी	उर्दू, फारसी, तथा अरबी
सूर्य	भानुमान्, दीप्तिरश्मि, चण्डांशु, अर्हस्कर, मार्त्तण्ड, अर्क, रवि, आदित्य, अर्यमा, दिवाकर, दिनेश, प्रभाकर, भास्कर, दिनकर, काश्यप, सविता, इन, तपन, दिनकत्, भानु, पूषण्, हेलि, तिग्मांशु, तरणि, उष्णांशु, माली आदि।	Sun	आफताब और शम्स
चन्द्रमा	चन्द्र, सोम, उडुपति, तारापति, तारेश, ग्लौ, हिमकर, निशाकर, शीतांशुमाली, इन्द्र, मृगांक, शीतद्युति, शीतरश्मि, शीतांशु, कलाधर, कलानिधि, द्विजराज, मयंक, राकेश, रजनीश, शशि, शशांक, कलेश, शशधर, सुधाकर, अब्ज, हिमांशु, आत्रेय	Moon	कमर, माह, फार
मंगल	भौम, यक्र, आवनेय, पापी, कुज, अंगारक, भूमिपुत्र, भूसुत, कुपुत्र, धराज, भूमिसूत, क्रूरनेत्र, रूधिर, क्षितिज, आर, भूतनय, महीसुत, लोहितांग, अवनिज, क्षितिनन्दन	Mars	मारीक, मिरीख, बेहराम
बुध	सौम्य, चान्द्रि, शान्त, अतिदीर्घ, इन्द्रसूत, चन्द्रपुत्र, ज्ञ, बोधन, विद्, वित्, तारातनय, रौहिणेय, हेम्न, श्यामगात्र, चन्द्रात्मज	Mercury	उबारद्, तीर
गुरू या बृहस्पति	बृहस्पति, प्रशान्त, त्रिदिवेशवन्द्य, सुरगुरू, देवगुरू, सुराचार्य, देवाचार्य, वाचस्पति, मन्त्री, देवेज्य, ईज्य, अमरमन्त्री, अंगिरा, अंगिरस, आर्य, जीव, सूरि	Jupiter	मुश्तरी, अइरमभन्द
शुक्र	कवि, काव्य, भृगु, भार्गवसुनु, दैत्यगुरू, भृगुसूत, भार्गव, सित, दानवेज्य, सूरि, उशनसा, अच्छ, आस्फुजित्, काण, सूनु	Venus	जुहरी, जुहारो, जुहरा
शनि	शनैश्चर, मन्द, अर्कपत्र, असित, नील, छायासुत, सूर्यपुत्र, भानुज, यम, तरणितनय, सौरि, छायात्मज, रविज, भास्करि, पंगु, आकि, कोण	Saturn	जूदुल, केदवान, जुहलू
राहु	सेहिकेय, अगु, स्वर्भानु, विधुतुन्द, फणि, तम, सर्व, असुर, क्रूर, अभि, कृष्णांग, गुह, दीर्घ, कविलाक्ष, आगव	Dragnos Head or Ascending Mode	रास
केतु	शिखी, ध्वज, राहुपुच्छ	Dragons Tail or Descending mode	जनब

ग्रहों का स्वरूप

महर्षि पराशर के अनुसार समस्त संसार की आत्मा के रूप में सूर्य को माना गया है। चन्द्रमा को मन के रूप में स्वीकार किया गया है। क्योंकि वह मन की ही भाँति चंचल होता है। डॉ हरिशंकर पाठक ने फलदीपिका नामक ग्रन्थ में इस बात की पुष्टि करते हुए लिखा है कि –

पित्तास्थिसारोऽल्पकचश्च रक्तश्यामाकृतिः स्यान्मधुपिंगलाक्षः।
कौसुम्भवासाश्चतुरस्त्रदेहः शूरः प्रचण्डः पृथुबाहुरर्कः।।[6]

मंगल ग्रह को सत्व गुण का खान बताया है। वाणी को बुध ग्रह के अधीन माना गया है। गुरू को ज्ञान के लिए सर्वोपयुक्त माना गया है। महर्षि पराश गुरू के गुणों की चर्चा करते हुए लिखते हैं कि

दिवाकरो हि विश्वात्मा मनः कुमुदबान्धवः।
सत्वं कुजो बुधो बाणीदायको विबुधैः स्मृतः।।
देवेज्यो ज्ञसनसुखदो भृगुर्वीर्यप्रदायकः।
क्रूरदृग् विबुधैरूक्तच्छायासूनुश्च सुखदः।। [7]

ग्रहों में सूर्य चन्द्र राजा, मंगल सेनापति, बुध राजकुमार, गुरू, शुक्र मन्त्री, शनि को सेवक के रूप में माना गया है[8]। फलदीपिका में ग्रहों के स्वरूप की चर्चा करते हुए कहा गया है कि सूर्य कि प्रकृति पित्त प्रधान है। चन्द्रमा स्थूल शरीर, युवा, सुन्दर

---

6 फलदीपिका, व्या0 – डा हरिशंकर पाठक, ग्रहभेद, श्लोक सं0 –8, पृ0 सं0 –12।

7 बृहत्पाराशरहोराशास्त्र, ग्रहस्वरूपवर्णनाध्याय, श्लोक सं0 – 13–14, पृष्ठ सं0 – 11।

8 राजानौ भानुहिमगु नेता ज्ञेयो धरात्मजः।
बुधो राजकुमारश्च सचिवौ गुरूभार्गवौ ।।
प्रेष्यको रविपुत्रश्च सेना स्वर्भानुपुच्छकौ।
एवं क्रमेण वै विप्र ! सूर्यादींस्तु विचिन्त्येत्।।
– बृहत्पाराशरहोराशास्त्र, ग्रहस्वरूपवर्णनाध्याय, श्लोक संख्या – 15–16, पृ0 सं0 – 11।

और आकर्षक आँखों वाला है।[9] भौम के शरीर का मध्यभाग अत्यन्त क्षीण है।[1011] बुध दूर्वादल के समान हरे रंग का वस्त्र धारण करने वाला है। धर्म पर इसका अधिकार होता है।[12] पीत आभा से युक्त, उभरा हुआ वक्ष, सुन्दर बुद्धि से युक्त बुहस्पति के स्वरूप को मना नहीं किया जा सकता है।[1314] पौरूषत्व पर शुक्र के अधिकार को सुरक्षित रखा गया है।[15] शनि का शरीर अत्यन्त ही विकराल अवस्था में वर्णित किया गया है। शनि की विकरालता को प्रस्तुत करते हुए फलदीपिकाकार ने लिखा है –

पंगुर्निम्नविलोचनः कृशतनुर्दीर्घः सिरालोऽलसः
कृष्णांगः पवनात्मकोऽतिपिशुनः स्नायुवात्मको निघृणः।।
मूर्खः स्थूलनखद्विजः परूषरोमांगोऽशुचिस्तामसो
रौद्रः क्रोधपरो जरापरिणतः कृष्णाम्बरो भास्करिः।।[16]

ग्रहों की दृष्टि

प्रत्येक ग्रह अपने से सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से, तीसरे और दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पाँचवे और नवें भाव को दो चरण दृष्टि से तथा चौथे और आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से देखता है। परन्तु मंगल चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से देखता है। साथ ही मंगल अपने से चौथे भाव को, गुरू पाँचवें और नवें भाव को तथा शनि तीसरे और सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। वराहमिहिर ने इसकी व्याख्या निम्न प्रकार से करने की कोशिश की है –

त्रिदशत्रिकोणचतुरस्रसप्तमान्यवलोकयन्ति चरणाभिवृद्धितः।
रविजामरेज्यरूधिराः परे च ये क्रमशो भवन्ति किल वीक्षणेऽधिकाः।।[17]

ग्रह	एक चरण दृष्टि	दो चरण दृष्टि	तीन चरण दृष्टि	सम्पूर्ण दृष्टि
सूर्य	३, १०	९, ५	८, ४	७
चन्द्र	३, १०	९, ५	८, ४	७
मंगल	३, १०	९, ५	८, ४	४
बुध	३, १०	९, ५	८, ४	७
गुरू	३, १०	९, ५	८, ४	५, ७, ९
शुक्र	३, १०	९, ५	८, ४	७
शनि	३, १०	९, ५	८, ४	३, ७, १०
राहु	३, ६	२, १०	स्वयं के घर में	५, ७
केतु	६	२, १०	स्वयं के घर में	५, ७

ग्रहों का मैत्री चक्र

---

9 स्थूलो युवा च स्थविरः कृशः सितः कान्तेक्षणश्चासितसूक्ष्ममूर्धजः।
रक्तैकसारो मृदुवाक् सितांशुको गौरः शशी वातकफात्मको मृदुः।।
– फलदीपिका, व्या0 – डा हरिशंकर पाठक, ग्रहभेद, श्लोक संख्या –9, पृष्ठ संख्या –12।

10 मध्ये कृशः कुंजितदीप्तकेशः क्रूरेक्षणः पैतिक उग्रबुद्धिः।
रक्ताम्बरो रक्ततनुर्महीजश्चन्दोऽत्येदारस्तरूणोऽतिमज्जः।।
– फलदीपिका, व्या0 – डा हरिशंकर पाठक, ग्रहभेद, श्लोक संख्या –10, पृष्ठ संख्या –12।

11 रक्तश्यामो भास्करो गौर इन्दुर्नात्युच्चांगो रक्तगौरश्च वक्रः।
दूर्वाश्यामो ज्ञो ग्ररूगौरगात्रः श्यामः शुक्रो भास्करिः कृष्णदेहः।।
– बृहज्जातक होराशास्त्रम्, वराहमिहिर, ग्रहप्रभेदाध्यायः –2, श्लोक संख्या 4, पृ0 संख्या – 37।

12 दूर्वालताश्यामतनुस्त्रिधातुमिश्रः सिरावान्मधुरोक्तियुक्तः।
रक्तायताक्षो हरितांशुकस्त्वक्सारो बुधो हास्यरूचिः समांगः।।
– फलदीपिका, व्या0 – डा हरिशंकर पाठक, ग्रहभेद, श्लोक संख्या –11, पृष्ठ संख्या –12।

13 रक्तश्यामो दिवाधीशो गौरगात्रो निशाकरः।
नातिदीर्घः कुजो रक्तो दूर्वाश्यामो बुधस्तथा।।17।।
गौरगात्रो गुरूज्ञेयः शुक्रः श्यामस्तथैव च ।
कृष्णदेहो रवेः पुत्रो ज्ञायते द्विजसत्तम्।।18।।
–बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, महर्षि पाराशर, ग्रहस्वरूपवर्णनाध्याय, पृष्ठ संख्या – 11।

14 पीतघुतिः पिंगकचेक्षणः स्यात् पीनोन्नतोराश्च बृहच्छरीरः।
कफात्मकः श्रेष्ठमतिः सुरेडयः सिंहाब्जनादश्च वसुप्रधानः।।
– फलदीपिका, व्या0 – डा हरिशंकर पाठक, ग्रहभेद, श्लोक संख्या –12, पृष्ठ संख्या –13।

15 चित्राम्बराकुंजितकृष्णकेशः स्थूलांगदेहश्च कफानिलात्मा।
दूर्वाकुराभः कमनो विशालनेत्रो भृगुः साधितशुक्लवृद्धिः।।
– फलदीपिका, व्या0 – डा हरिशंकर पाठक, ग्रहभेद, श्लोक सं0 –13, पृ0 सं0 –13।

16 फलदीपिका, व्या0 – डा हरिशंकर पाठक, ग्रहभेद, श्लोक सं0 –14, पृ0 सं0 –13।

17 बृहज्जातक होराशास्त्र, वराहमिहिर, ग्रहप्रभेदाध्याय 2, श्लोक सं0 – 13, पृ0 सं0 – 49।

सत्याचार्य के मत के अनुसार सूर्यादि सब ग्रहों के अपने अपने मूल त्रिकोण भवन से द्वितीय, द्वादश, पंचम, नवम, अष्टम और चतुर्थ स्थान के स्वामी तथा अपने अपने उच्च स्थान के स्वामी मित्र होते हैं। अन्य स्थानों के स्वामी शत्रु होते हैं। खास बात यह है कि जो ग्रह दो राशियों का स्वामी है उसकी दोनों राशियाँ उक्त होने से मित्र और अनुक्त होने पर शत्रु का व्यवहार करती हैं। जैसे सूर्य का मूल त्रिकोण है, उससे द्वितीय और एकादश दोनों राशियों में कन्या राशि द्वितीय में होने के कारण उक्त हुआ और मिथुन एकादश राशियों में होने के कारण अनुक्त हुआ अतः सूर्य का बुध सम हुआ।[18] ग्रहों के मित्रता और शत्रुता दोनों को नीचे की सारणी में और भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है –

ग्रह	अधिमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
सूर्य	चन्द्र	बुध, मंगल	गुरू	शुक्र	शनि
चन्द्र	बुध	शुक्र, गुरू, शनि	सूर्य	मंगल	–
मंगल	–	शनि, सूर्य, चन्द्र	गुरू	शुक्र	बुध
बुध	सूर्य	गुरू, चन्द्र, शुक्र	–	मंगल, शनि	–
गुरू	मंगल, चन्द्र	शनि	–	शुक्र	बुध
शुक्र	–	गुरू, सूर्य, चन्द्र	बुध, शनि	मंगल	–
शनि	–	गुरू, चन्द्र, मंगल	बुध, शुक्र	–	सूर्य
राहु	–	शुक्र, शनि	गुरू	सूर्य, चन्द्र, मंगल	–
केतु	–	सूर्य, चन्द्र, मंगल	बुध, गुरू	शुक्र, शनि	–

ग्रहों के गलत प्रभाव से होनेवाले सम्भावित रोग

ग्रह	सम्भावित रोग
सूर्य	सिरदर्द, ज्वर, महाज्वर, नेत्रविकार
चन्द्र	तिल्ली, पांडु, यकृत, कफ, उदर–सम्बन्धी विकार
मंगल	पित्त, वायु, कर्णरोग, विसूचिका, खुजली
बुध	खांसी, हृदय रोग, कुष्ठ, आंत
गुरू	कण्ठ रोग, गुल्म रोग, प्लीहा, फोड़ा– फुंसी, गुप्त स्थानों में रोग
शुक्र	प्रमेह, मेदवृद्धि, कर्ण रोग, वीर्य विकार, नपुंसकता, वीर्य या इन्द्रिय सम्बन्धी रोग
शनि	उन्माद, वातरोग, भगन्दर, गठिया, स्नायु रोग
राहु	अनिद्रा, उदर, मस्तिष्क विकार एवं पागलपन
केतु	चर्म रोग, मस्तिष्क रोग तथा क्षुधा जनित रोग

[18] (1)जीवौ जीवकुधौ सितेन्दुतनयौ व्यर्का विभौमाः क्रमा
द्वीन्द्वर्का विकुजेन्द्विनाश्चव सुहृदः केषांचिदेवं मतम्।
सत्योक्ते सुहृदस्त्रिकोणभवनास्त्वास्वान्त्यधीधर्मपाः।
स्वोच्चायुस्सुखपाश्च लक्षणाविधेर्नान्यैः विरोधादिति।।
– बृहज्जातक होराशास्त्र, वराहमिहिर, ग्रहप्रभेदाध्याय 2, श्लोक संख्या – 15, पृष्ठ संख्या – 50।

(2) अन्योन्यस्य धनव्ययायसहजव्यापारबन्धुस्थिता।
स्तत्काले सुहृदः स्वतुंगभवनेऽप्येकेऽरयस्त्वन्यथा।
द्वयेकानुक्तभवान् सुहृत्समरिपून् संचित्य नैसर्गिकां
स्तत्काले च पुनस्तु तानधिसुहृन्मित्रादिभिः कल्पयेत्।।
– बृहज्जातक होराशास्त्र, वराहमिहिर, ग्रहप्रभेदाध्याय 2, श्लोक संख्या – 16, पृष्ठ संख्या – 51।

I. राशि एवं उसके स्वरूप

पाराशर होराशास्त्र के अनुसार 'अहोरात्र' इस पद के प्रथम एवं अन्तिम वर्ण का लोप होने से 'होरा' शब्द तैयार होता है।[19] इस होरा के ज्ञान मात्र से जातक के कर्मफल का निर्धारण होता है।[20] कालस्वरूप जो अव्यक्तात्मा, जनार्दन, विष्णु हैं उन्हीं के अंगस्वरूप मेषादि बारह राशियों की चर्चा की गई है। इन्हीं अंगस्वरूप बारह राशियों को स्थिर तारों के १२ समूहों के रूप में जाना जाता है। ये द्वादश राशियाँ क्रमशः मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ तथा मीन हैं –

यदव्यक्तात्मको विष्णुः कालरूपो जनार्दनः। तस्यांगानि निबोध त्वं क्रमान्मेषादिराशयः।।

मेषो वृषश्च मिथुनः कर्क–सिंह–कुमारिकाः। तुलालिचापमकराः कुम्भमीनौ यथाक्रमम्।।[21]

2 1/4 नक्षत्र या ९ नक्षत्र–चरण की एक राशि होती है। इस प्रकार प्रत्येक राशि 30 अंश की होती है। जैसा कि सम्पूर्ण भ–चक्र (आकाश मण्डल) को ३६० अंशों तथा १०८ भागों में विभाजित किया गया है। अतः एक राशि ३० अंश अथवा ९ भागों की होती है। कौन सी राशि किस नक्षत्र चरण की है, या फिर राशियाँ किन नक्षत्रों के कौन से चरण से समाहित हैं इसको पूर्ण रूप से जान लेना ही कर्मफल में निर्णय में शुद्धि प्रदान करता है।

ऋग्वेदसंहिता में चक्र शब्द आया है, जो राशिचक्र का बोध है। **" द्वादशाहं नहि तज्जराय"**[22] इस मन्त्र में द्वादशारं बारह राशियों का बोधक है। प्रकरणगत विशेषताओं के ऊपर ध्यान देन से इस मंत्र में स्पष्टतया द्वादश राशियों का निर्देश मिलता है। श्री डॉ0 सम्पूर्णानान्द जी,[23] सामान्य भ0 पू0 मुख्यमंत्री, उत्तरप्रदेश, 'द्वादशारं' शब्द को द्वादश राशियों के होने में शंका व्यक्त करते हैं तथा इसे द्वादश महीनों के द्वोतक के रूप में संभावना व्यक्त करते हैं, परन्तु उनकी यह सम्भावना तर्कसंगत प्रतीत नहीं होती क्योंकि कारण स्पष्ट है कि इस मंत्र के आनेवाले भाग में 360 दिन वर्ष – 12 राशियों के माने गये हैं। 12 महीनों के 360 दिन नहीं हो सकते, क्योंकि चान्द्रमास 29।। दिन से अधिक नहीं होता, इस हिसाब से वर्ष में 354 दिन होते हैं, किन्तु मंत्र में 360 दिन बताये गये हैं, जो कि द्वादश राशि मान लेने पर ठीक आ जाते हैं। प्रत्येक राशि में 30 अंश तथा प्रत्येक अंश का माध्यम मान एक दिन इस प्रकार 360 दिन द्वादश राश्यात्मक चक्र में पूरे हो जाते हैं । जैन ज्योतिष के विद्वान गर्ग, ऋषिपुत्र और कालकाचार्य ने परम्परागत राशिचक्र का निरूपण किया है।

मेष राशि

राशि चक्र की यह पहली राशि है। इस राशि का चिन्ह "मेढा' या भेडा है। इस राशि का विस्तार चक्र राशि चक्र के प्रथम 30 अंश तक (कुल 30 अंश) है। राशि चक्र का यह प्रथम बिन्दु प्रतिवर्ष लगभग 50 सेकेण्ड की गति से पीछे खिसकता जाता है। इस बिन्दु की इस वक्र गति ने ज्योतिषीय गणना में दो प्रकार की पद्धतियों को जन्म दिया है। भारतीय ज्योतिषी इस बिन्दु को स्थिर मानकर अपनी गणना करते हैं। इसे निरयण पद्धति कहा जाता है और पश्चिम के ज्योतिषी इसमें अयनांश जोड़कर 'सायन' पद्धति अपनाते हैं। किन्तु हमें भारतीय ज्योतिष के आधार पर गणना करनी चाहिये। मेष राशि पूर्व दिशा की द्योतक है तथा इसका स्वामी 'मंगल' है। इसके तीन द्रेष्काणों (दस दस अंशों के तीन सम भागों) के स्वामी क्रमशः मंगल–मंगल, मंगल–सूर्य और मंगल–गुरु हैं। मेष राशि के अन्तर्गत अश्विनी नक्षत्र के चारों चरण और कृत्तिका का प्रथम चरण आते हैं। प्रत्येक चरण 3.20 अंश का है,जो नवांश के एक पद के बराबर का है। इन चरणों के स्वामी क्रमशः अश्विनी प्रथम चरण में केतु–मंगल, द्वितीय चरण में केतु–शुक्र, तृतीय चरण में केतु–बुध, चतुर्थ चरण में केतु–चन्द्रमा, भरणी प्रथम चरण में शुक्र–सूर्य, द्वितीय चरण में शुक्र–बुध, तृतीय चरण में शुक्र–शुक्र, और भरणी चतुर्थ चरण में शुक्र–मंगल,कृत्तिका के प्रथम चरण में सूर्य–गुरु हैं।

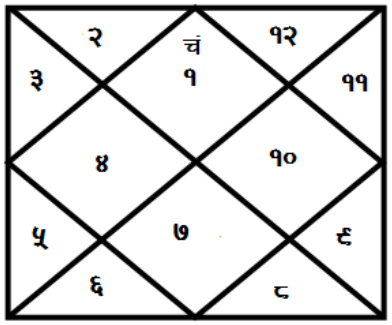

मेष राशि का स्वरूप मेंढ़ा जैसा है। यह पर्वत विहारिणी, उग्र स्वभाव, दिन के मतान्तर से रात्री पहर तक, विषम, पूर्व दिशा की निवासिनी, अल्प कामी, राजा की मित्र, रूक्ष कान्ति, क्षत्रिय वर्ण, रजोगुणी, पृष्ठोदयी, पुल्लिंग, चर संज्ञक, दृढ़ शरीर, ह्रस्व आकार, पशु योनि, निर्जल, अग्नि तत्व, चतुष्पद, रक्त वर्ण, उष्ण प्रकृति, पित्त धातु, अति शब्दकारी तथा अल्प सन्तति वाली है। इसका प्रभुत्त्व मस्तक पर है।[24]

---

[19] अहोरात्र–पदान्त्यलोपाद्धोरेति कथ्यते। तस्या हि ज्ञानमात्रेण जातकर्मफलं वदेत्।
बृहत् पाराशर होराशास्त्र, राशीलीलाध्याय, ५ श्लोक संख्या 1, पेज संख्या 34।।

[20] होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके वांच्छन्ति पूर्वापरवर्णलोपात्।
कर्मार्जित पूर्वभवे सदादि यत् तस्य पंक्तिं समभिव्यनक्ति।।
वराहमिहिर, बृहज्जातक होराशास्त्रं, राशिप्रभेदाध्याय 1, श्लोक संख्या 3, पेज संख्या –7।

[21] बृहत् पाराशर होराशास्त्र, राशीलीलाध्याय, ५ श्लोक संख्या 2–३, पेज संख्या 34।।

[22] ऋग्वेद संहिता, प्रथम मण्डल , 164वाँ सूक्त , मन्त्र संख्या 11, पेज संख्या – 130 in Mahrshi University of Management Vedic Literature collection।

[23] क्या भारतीय ज्योतिष ग्रीक से आया है ? 'साप्ताहिक संसार' 5 जुलाई , 1945।

[24] रक्तवर्णो बृहद्गात्रस्चतुष्पाद् रात्रिविक्रमी।।
पूर्ववासी नृपज्ञातिः शैलचारी रजोगुणी ।
पृष्ठोदयी पावकी च मेषराशिः कुजाधिपः।।
बृहत् पाराशर होराशास्त्र, राशीलीलाध्याय, ५ श्लोक संख्या 6–7, पेज संख्या 35।।

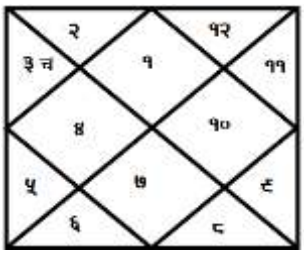

भृगु संहिता[25] के अनुसार इस राशि में जन्म लेनेवाला जातक अधिक उग्र और निरंकुश होता है। वह किसी की जरा सी भी विपरीत बात में या कर्य में जातक को क्रोधात्मक स्वभाव देता है, फलस्वरूप जातक बात बात मे झगडा करने को उतारू हो जाता है। जातक को किसी की आधीनता पसंद नही होती है.वह अपने अनुसार ही कार्य और बात करना पसंद करता है। मेष लगन मे जन्म लेने वाला जातक दुबले पतले शरीर वाला, अधिक बोलने वाला, उग्र स्वभाव वाला, रजोगुणी, अहंकारी, चंचल, बुद्धिमान, धर्मात्मा, बहुत चतुर, अल्प संतति, अधिक पित्त वाला, सब प्रकार के भोजन करने वाला, उदार, कुलदीपक, स्त्रियों से अल्प स्नेह, इनका शरीर कुछ लालिमा लिये होता है। मेष लगन मे जन्म लेने वाले जातक अपनी आयु के 6, 8, 15, 20, 28, 34, 40, 45, 56, और 63 वें साल में शारीरिक कष्ट और धन हानि का सामना करना पडता है, 16, 20, 28, 34, 41, 48, और 51 साल मे जातक को धन की प्राप्ति वाहन सुख, भाग्य वृद्धि, आदि विविध प्रकार के लाभ और आनन्द प्राप्त होते हैं।

वृष राशि

राशि चक्र की यह दूसरी राशि है। इस राशि का चिन्ह 'बैल' है। बैल स्वभाव से ही अधिक पारिश्रमी और बहुत अधिक वीर्यवान होता है। साधारणतः वह शांत रहता है। किन्तु क्रोध आने पर वह उग्र रूप धारण कर लेता है। यह स्वभाव वृष राशि के जातक में भी पाया जाता है। वृष राशि का विस्तार राशि चक्र के 30 अंश से 60 अंश के बीच पाया जाता है। इसका स्वामी शुक्र ग्रह है। इसके तीन द्रेष्काणों में उनके स्वामी **'शुक्र–शुक्र', 'शुक्र–बुध'** और **'शुक्र–शनि'** हैं। इसके अन्तर्गत कृत्तिका नक्षत्र के तीन चरण, रोहिणीके चारों चरण, और मृगशिरा के प्रथम दो चरण आते हैं। इन चरणों के स्वामी कृत्तिका के द्वितीय चरण के स्वामी सूर्य–शनि, तृतीय चरण के स्वामी चन्द्रमा–शनि, चतुर्थ चरण के स्वामी सूर्य–गुरु हैं। रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण के स्वामी चन्द्रमा–मंगल, दूसरे चरण के स्वामी चन्द्रमा–शुक्र, तीसरे चरण के स्वामी चन्द्रमा–बुध, चौथे चरण के स्वामी चन्द्रमा–चन्द्रमा है। मृगशिरा नक्षत्र के पहले चरण के मालिक मंगल–सूर्य और दूसरे चरण के मालिक मंगल–बुध है।

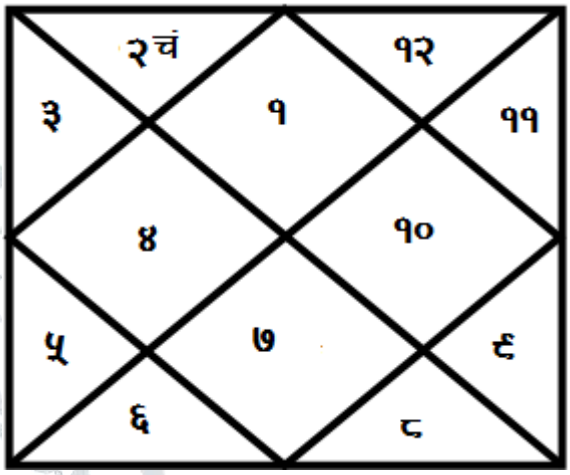

इस राशि का स्वरूप बेल जैसा है। यह समतल विहारिणी, सौम्य स्वभाव, रात्रि बली, सम, दक्षिण दिशा की निवासिनी, मध्यम कामी, रूक्ष कान्ति, वैश्य वर्ण, रजोगुणी, पृष्ठोदयी, स्त्री लिंग, स्थिर संज्ञक, दृढ़ शरीर, ह्रस्व आकार, पशु योनि, निर्जल, भूमि तत्व, चतुष्पद, श्वेत वर्ण, शीत प्रकृति, वात धातु, अति शब्दकारी तथा मध्यम सन्तति वाली है।[26] इसका प्रभुत्त्व मुख पर है।

जब चन्द्रमा निरयण पद्धति से वृष राशि में होता है तो जातक की वृष राशि मानी जाती है। जन्म समय में जन्म लगन वृष होने पर भी यही प्रभाव जातक पर होता है। इस राशि मे पैदा होने वाले जातक शौकीन तबियत, सजावटी स्वभाव, जीवन साथी के साथ मिलकर कार्य करने की वृत्ति, अपने को उच्च समाज से जोड़ कर चलने वाले, अपने नाम को दूर दूर तक फैलाने वाले, हर किसी के लिये उदार स्वभाव, भोजन के शौकीन, बहुत ही शांत प्रकृति, मगर जब क्रोध आजाये तो मरने मारने के लिये तैयार, बचपन में बहुत शैतान, जवानी मे कठोर परिश्रमी और बुढापे में अधिक चिताओं से घिरे रहने वाले, जीवन साथी से वियोग के बाद दुखी रहने वाले और अपने को एकांत में रखने वाले पाये जाते हैं।[27] इनके जीवन में उम्र की 45 वीं साल के बाद दुखों का बोझ लद जाता है और अपने को आराम में नही रखपाते हैं। वृष, कन्या, मकर का त्रिकोण, इनको शुक्र–बुध–शनि की पूरी योग्यता देता है, माया–व्यापार–कार्य या धन–व्यापार–कार्य का समावेश होने के कारण इस राशि वाले धनी होते चले जाते है, मगर शनि की चालाकियों के कारण यह लोग जल्दी ही बदनाम भी हो जाते हैं। गाने बजाने और अपने कंठ का प्रयोग करने के कारण इनकी आवाज अधिकतर बुलन्द होती है।

मिथुन

मिथुन राशि ज्योतिष के राशिचक्र की तृतीय राशी है। इसका उद्भव मिथुन तारामंडल से माना जाता है। इस राशि का स्वरूप हाथ में गदा लिए पुरूष तथा साथ में वीणा बजाती हुई स्त्री के जैसा है। यह वन विकारिणी, उग्र स्वभाव, दिवा बली, तमो गुणी, विषम, पश्चिम दिशा की निवासिनी, मध्यम कामी, स्निग्ध कान्ति, शूद्र वर्ण, शीर्षोदयी, पुल्लिंग, द्विस्वभाव, मृदु शरीर, सम

---

[25] भृगु संहिता, द्वितीय अध्याय, पेज संख्या 56।

[26] श्वेतः शुकाधिपो दीर्घः चश्तुष्पाच्छवरीवली।
याम्येट् ग्राभ्यो वणिग् भूमि रजः पृष्ठोदयो वृषः।।
बृहत् पाराशर होराशास्त्र, राशीलीलाध्याय, ५ श्लोक संख्या 8, पेज संख्या 35।।

[27] भृगु संहिता, द्वितीय अध्याय, पेज संख्या 57।

आकार, मनुष्य योनि, निर्जल, वायु तत्व, द्विपद, हरित वर्ण, उष्ण प्रकृति, सम धातु, दीर्घ शब्दकारी तथा मध्यम सन्तति वाली है।[28] इसका प्रभुत्व कण्ठ तथा बाहु पर है।[29]

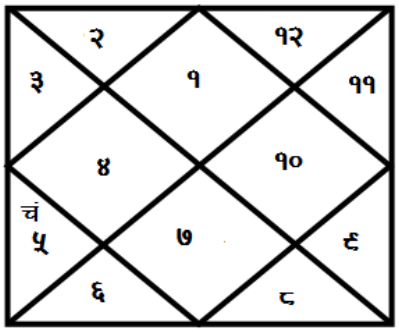

कर्क

राशि चक्र की यह चौथी राशि है। यह उत्तर दिशा की द्योतक है तथा जल त्रिकोण की पहली राशि है। इसका चिन्ह केकडा है। यह चर राशि है। इसका विस्तार चक्र 90 से 120 अंश के अन्दर पाया जाता है। इस राशि का स्वामी चन्द्रमा है। इसके तीन द्रेष्काणों के स्वामी चन्द्रमा, मंगल और गुरु हैं। इसके अन्तर्गत पुनर्वसु नक्षत्र का अन्तिम चरण, पुष्य नक्षत्र के चारों चरण तथा अश्लेशा नक्षत्र के चारों चरण आते हैं।

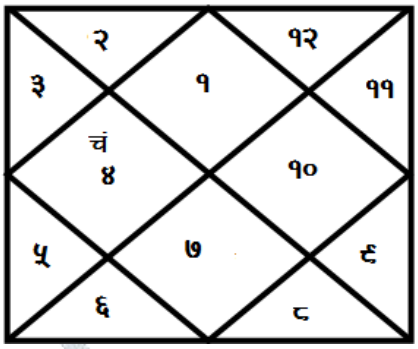

इस राशि का स्वरूप केकड़ा जैसा है। यह जल विहारिणी, सौम्य स्वभाव, रात्रि बली, सम, उत्तर दिशा की निवासिनी, बहु कामी, स्निग्ध कान्ति, विप्र वर्ण, सतोगुणी, पृष्ठोदयी, स्त्री लिंग, चर संज्ञक, मृदु शरीर, सम आकार, जलचर योनि, सजल, जलतत्व, पाद विहीन, गुलाबी वर्ण, शीत प्रकृति, कफ धातु, निःशब्द तथा बहु सन्तति वाली होती है।[30] इसका प्रभुत्ववक्षः स्थल पर है।

जिन जातकों के जन्म समय में निरयण चन्द्रमा कर्क राशि में संचरण कर रहा होता है। उनकी जन्म राशि कर्क मानी जाती है। जन्म के समय लगन कर्क राशि के अन्दर होने से भी कर्क का ही प्रभाव मिलता है। कर्क लगन मे जन्म लेने वाला जातक श्रेष्ठ बुद्धि वाला जलविहारी, कामुक, कृतज्ञ, ज्योतिषी, सुगंधित पदार्थों का सेवी, और भोगी होता है, उसे शानो शौकत से रहना पसंद होता है। वो असाधरण प्रतिभा से खेलता रहता है तथा उत्कृष्ट आदर्श वादी, सचेतक, और निष्ठावान होता है। उसके रोम रोम में मातृ–भक्ति भरी रहती है।

कर्क जातकों की प्रवृति और स्वभाव समझने के लिये हमें कर्क के एक विशेष गुण की ओर अवश्य ध्यान देना होगा क्योंकि केकडा जब किसी वस्तु या जीव को अपने पंजों के जकड लेता है तो उसे आसानी से नही छोडता है, भले ही इसके लिये उसे अपने पंजे गंवाने पडें। यह भावना उन्हें ग्रहणशील, एकाग्रता, और धैर्य के गुण प्रदान करती है। उनका मूड बदलते देर नही लगती है। उनके अन्दर अपार कल्पना शक्ति होती है।[31] उनकी स्मरण शक्ति बहुत तीव्र होती है। अतीत का उनके लिये भारी महत्व होता है। कर्क जातकों को अपने परिवार में विशेषकर पत्नी तथा पुत्र के के प्रति प्रबल मोह होता है,उनके बिना उनका जीवन अधूरा रहता है। मैत्री को वे जीवन भर निभाना जानते हैं। अपनी इच्छा के स्वामी होते हैं तथा खुद पर किसी भी प्रकार का अंकुश थोपा जाना सहन नहीं करते। पनी गुप्त विद्याओं धर्म या किसी असाधारण जीवन दर्शन में वो गहरी दिलचस्पी पैदा कर लेते हैं।

सिंह राशि

सिंह राशि चक्र की पाचवीं राशि होने के साथ साथ पूर्व दिशा का भी द्योतक है। इसका चिन्ह शेर है। इसका विस्तार राशि चक्र के 120 अंश से 150 अंश तक है.सिंह राशि का स्वामी सूर्य है और इस राशि का तत्व अग्नि है। इसके तीन द्रेष्काण और उनके स्वामी सूर्य, गुरु और मंगल हैं। इसके अन्तर्गत मघा नक्षत्र के चारों चरण, पूर्वाफाल्गुनी के चारों चरण और उत्तराफाल्गुनी का पहला चरण आता है।

इस राशि का स्वरूप सिंह जैसा है। यह पर्वत विहारिणी, उग्र स्वभाव, दिवा बली, विषम, पूर्व दिशा की निवासिनी, अल्पकामी, रूक्ष कान्ति, क्षत्रिय वर्ण, सतोगुणी, शीर्षोदयी, पुल्लिंग, स्थिर संज्ञक, दृढ़ शरीर, दीर्घ आकार, पशु योनि, निर्जल, अग्नि तत्त्व, चतुष्पद, धूम्र वर्ण, उष्ण प्रकृति, पित्त धातु, दीर्घ शब्दकारी तथा अल्प सन्ततिवाली है।[32] इसका प्रभुत्व हृदय पर है। जिन व्यक्तियों के जन्म समय में चन्द्रमा सिंह लगन मे होता है, वे सिंह राशि के जातक कहलाते हैं। जो इस लगन में पैदा होते हैं वे भी इस राशि के प्रभाव मे होते है। पांडु मिट्टी के रंग वाले जातक, पित्त और वायु विकार से परेशान रहने वाले लोग,रसीली वस्तुओं को पसंद करने वाले होते हैं,कम भोजन करना और खूब घूमना,इनकी आदत होती है,छाती बडी होने के कारण इनमे हिम्मत बहुत

---

[28] शीर्षोदयी नृमिथुनं सगदं च सवीणकम्।
प्रत्यंगमरूद् द्विपाद्रात्रिबली ग्रामव्रजोऽनीली।।
समगात्रोहरिद्वर्णो मिथुनाख्यो बुधाधिपः।
– बृहत् पाराशर होराशास्त्र, राशीलीलाध्याय, ५ श्लोक संख्या 9, पेज संख्या 35।।

[29] भृगु संहिता, द्वितीय अध्याय, पेज संख्या 58।

[30] पाटलो वनचारी च ब्राह्मणो निशि वीर्यवान ।
बहुपादी स्थूलस्तनुस्तथा सत्त्वगुणी जली।
पृष्ठोदयी कर्कराशिर्मृगांकाधिपतिः स्मृतः।।
बृहत् पाराशर होराशास्त्र, राशीलीलाध्याय, ५ श्लोक संख्या 10–11, पेज संख्या 35।।

[31] भृगु संहिता, द्वितीय अध्याय, पेज संख्या 59।

[32] सिंहः सूर्याधिपः सत्त्वी चतुष्पात् क्षत्रियो वनी।
शीर्षोदयी बृहद्गात्रः पाण्डुः पूर्वेड् घुवीर्यवान्।
–बृहत् पाराशर होराशास्त्र, राशीलीलाध्याय, ५ श्लोक संख्या 13, पेज सं0 35।।

अधिक होती है और मौका आने पर यह लोग जान पर खेलने से भी नही चूकते। इस लग्न में जन्म लेने वाला जातक जीवन के पहले दौर मे सुखी, दूसरे में दुखी और अन्तिम अवस्था में पूर्ण सुखी होता है।[33]

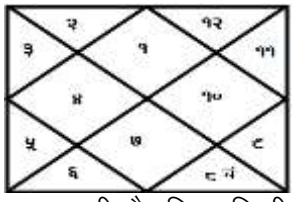

सिंह राशि शाही राशि मानी जाती है । सोचना शाही, करना शाही, खाना शाही और रहना शाही, इस राशि वाले लोग जुबान के पक्के होते हैं। उनके अन्दर छिछोडपन वाली बात नही होती है, अपनी मर्यादा मे रहना, और जो भी पहले से चलता आया है,उसे ही सामने रख कर अपने जीवन को चलाना,इस राशि वाले व्यक्ति से सीखा जा सकता वह आदेश देना जानता है, किसी का आदेश उसे सहन नही है, जिस किसी से प्रेम करेगा, उसके मरते दम तक निभायेगा। जीवन साथी के प्रति अपने को पूर्ण रूप से समर्पित रखेगा,अपने व्यक्तिगत जीवन में किसी का आना इस राशि वाले को कतई पसंद नही है और सबसे अधिक अपने जीवन साथी के बारे में वह किसी का दखल पसंद नही कर सकता है।

कन्या राशि

यह राशि चक्र की छठी राशि है। दक्षिण दिशा की द्योतक है.इस राशि का चिह्न हाथ मे फूल की डाली लिये कन्या है. इसका विस्तार राशि चक्र के १५० अंशों से १८० अंश तक है। इस राशि का स्वामी बुध है,इस राशि के तीन द्रेष्काणों के स्वामी बुध[34],शनि और शुक्र हैं। इसके अन्तर्गतउत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के दूसरे, तीसरे, और चौथे चरण,चित्रा के पहले दो चरण और हस्त नक्षत्र के चारों चरण आते है. उत्तराफाल्गुनी के दूसरे चरण के स्वामी सूर्य और शनि है, जो जातक को उसके द्वारा किये जाने वाले कार्यों के प्रति अधिक महत्वाकांक्षा पैदा करते है, तीसरे चरण के स्वामी भी उपरोक्त होने के कारण दोनो ग्रहों के प्रभाव से घर और बाहर के बंटवारे को जातक के मन मे उत्पन्न करती है। चौथा चरण भावना की तरफ ले जाता है,और जातक दिमाग की अपेक्षा ह्रदय से काम लेना चालू कर देता है। इस राशि के लोग संकोची और शर्मीले प्रभाव के साथ झिझकने वाले देखे जाते है। मकान, जमीन और सेवाओं वाले कार्य ही इनकी समझ मे अधिक आते हैं। कर्जा, दुश्मनी और बीमारी के प्रति इनका लगाव और सेवायें देखने को मिलती है। इसका स्वरूप हाथ में धान तथा अग्नि लेकर नाव में बैठी हुई कुमारी कन्या जैसा है। यह शुभ स्थान

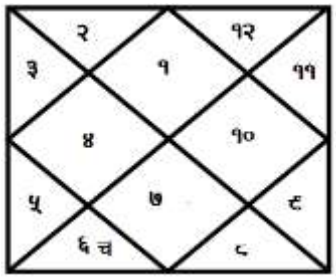

विहारिणी, सौम्य स्वभाव, रात्रि बली, सम, दक्षिण दिशा की निवासिनी, अल्प कामी, रूक्ष कान्ति, वैश्य वर्ण, निर्जल, भूमि तत्त्व, द्विपद, पीत वर्ण, शीत प्रकृति, वात धातु, अर्द्ध शब्दकारी तथा अल्प सन्ततिवाली है।[35]

तुला

इसका स्वरूप तराजू जैसा है। यह वन विहारिणी, उग्र स्वभाव, दिवा बली, विषम, पश्चिम दिशा की निवासिनी, अल्पकामी, स्निग्ध कान्ति, शूद्र वर्ण, रजोगुणी, शीर्षोदयी, पुल्लिंग चर संज्ञक, दृढ़ शरीर, दीर्घ आकार, मनुष्य योनि, सजल, वायु तत्व, द्विपद, विचित्र वर्ण, उष्ण प्रकृति, सम धातु, निःशब्द तथा अल्प सन्तति वाली है।[36] इसका प्रभुत्व कमर पर है।

वृश्चिक

इसका स्वरूप बिच्छू जैसा है। यह जल एवं भूमि विहारिणी,उग्र स्वभाव, तमोगुणी, रात्रि बली, सम, उत्तर दिशा की निवासिनी, बहुकामी, स्निग्ध कान्ति, विप्र वर्ण, शीर्षोदयी, स्त्री लिंग, स्थिर संज्ञक, बालों से भरा हुआ, कृश शरीर, दीर्घ आकार, कीट योनि, सजल, जल तत्व, बहुपाद, श्वेत वर्ण, शीत प्रकृति, कफ धातु, निःशब्द तथा बहु सन्तति वाली है।[37] इसका प्रभुत्व गुप्तांग पर है।

---

[33] भृगु संहिता, द्वितीय अध्याय, पेज संख्या 60।

34 पार्वतीयाथ कन्याख्या राशिर्दिनबलान्विता।
शीर्षोदया च मध्यांगा द्विपाद्याम्यचरा च सा।।
सा सस्यदहना वैश्या चित्रवर्णा प्रभंजिनी।
कुमारी तमसा युक्ता बालभावा बुधाधिपा।।
– बृहत् पाराशर होराशास्त्र, राशीलीलाध्याय, ५ श्लोक संख्या 13–14, पेज संख्या 35।।

[35] भृगु संहिता, द्वितीय अध्याय, पेज संख्या 61।

[36] शीर्षोदयी घ्रुविर्याढयो घटः कृष्णः रजोगुणी।
पश्चिमो भूचरो धातो शूद्रो मध्यतनुर्धिपात्।।
– बृहत् पाराशर होराशास्त्र, राशीलीलाध्याय, ५ श्लोक संख्या 15, पेज संख्या 36।।

[37] स्वल्पांगोबहुपाद्ब्राह्मणोबिली।
सौम्यस्थो दिनीवीर्याढ्यः पिशंगो जलभूवहः।
रोमस्वाढयोऽतितीक्ष्णाग्रो वृश्चिकश्च कूजाधिपः।।
– बृहत् पाराशर होराशास्त्र, राशीलीलाध्याय, ५ श्लोक संख्या 16, पेज संख्या 35।।

धनु

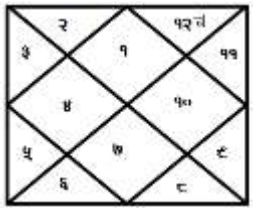

इसका स्वरूप आदि में दो पाँव तथा अन्त में चार पाँवों वाले ऐसे धनुर्धारि का है, जिसके शरीर का ऊपरी आधा भाग मनुष्य जैसा तथा निचला आधा भाग पशु जैसा होता है। यह गिरि विहारिणी, उग्र स्वभाव, सतोगुणी, दिवा बली, विषम, पूर्व दिशा की निवासिनी, अल्पकामी, रूक्ष कान्ति, क्षत्रिय वर्ण, पृष्ठोदयी, पुल्लिंग, द्वि स्वभाव, दृढ़ शरीर, सम आकार, नर पशु योनि, निर्जल, अग्नि तत्व, पूर्वार्द्ध द्विपद तथा उत्तरार्द्ध जलचर जैसा, स्वर्ण वर्ण, उष्ण प्रकृति, पित्त धातु, अति शब्दकारी तथा अल्प सन्तति वाली है। इसका प्रभुत्व जंघा पर होता है :–

पृष्ठोदयी त्वथ धनुर्गुरूस्वामी च सात्विकः।।
पिंगलो निशि वीर्याढयः पावकः क्षत्रियो द्विपात्।
आदावन्ते चतुष्पादः समगात्रो धनुर्धनः।
पूर्वस्थो वसुधाचारी बहुतेजः समन्वितः।।[38]

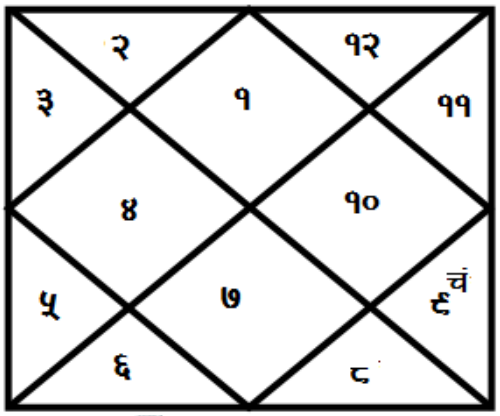

मकर

इसका स्वरूप मगर जैसा है। इसका प्रभुत्व घुटनों पर है। पराशर मुनि ने इसे वन विहारिणी, सौम्य स्वभाव, तमोगुणी, रात्रि बली, सम, दक्षिण दिशा की निवासिनी, अल्प कामी, रूक्ष कान्ति, वैश्य वर्ण, पृष्ठोदयी, स्त्री लिंग, चर संज्ञक, दृढ़ शरीर, सम आकार, जल जन्तु योनि, सजल, भूमि तत्व, चतुष्पद, पीतवर्ण, शीत प्रकृति, वात धातु, अति शब्दकारी तथा अल्प सन्तति वाली बतलाया है :–

मन्देशतामसो भूमियाम्येट् च निशि वीर्यवान्।।
पृष्ठोदयी बृहद्गात्रः कबुर्रो वनभूचरः।
आदौचतुष्पादन्ते तु विपदो जलगो मतः।।[39]

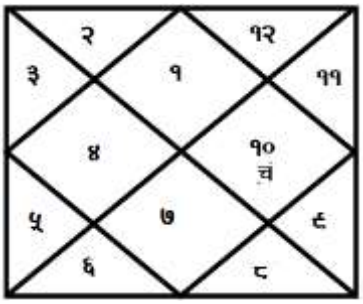

इसका स्वरूप घड़ा लिए हुए मनुष्य जैसा है। यह समतल विहारिणी, उग्र स्वभाव, दिवा बली, तमो गुणी, विषम, पश्चिम दिशा की निवासिनी, मध्यम, कामी, स्निग्ध कान्ति, शूद्र वर्ण, शीर्षोदयी, पुल्लिंग, स्थिर संज्ञक, दृढ़ शरीर, लघु आकार, जलचर योनि, सजल, वायु तत्व, पाद हीन, कबरे वर्ण वाली, उष्ण प्रकृति, सम धातु, खण्ड शब्दकारी, तथा मध्यम सन्तति वाली है। इसका प्रभुत्व पिण्डलियों पर है।

कुम्भ

इस रशिवाले जातक का कद लम्बा, नाक चपटी, चेहरा चौड़ा, गर्दन मोटी, होंठ मोटे, गाल चौड़े, शरीर दुर्बल तथा बाल रूखे होते हैं। इनका व्यकितत्व आकर्षक होने के साथ–साथ इनके पांव तथा मुंह पर तिल आदि के निशान होते हैं।

इस राशि के जातक दुस्साहसी, चंचल, व्यवहारकुशल, कुशाग्रबुद्धि, तपस्याप्रिय, भ्रातृदोही, ईर्ष्यालु, द्वेषी, अहंकारी, ज्ञानी, विद्वान, सुवक्ता, सुलेखक, दार्शनिक, स्वकार्य में चतुर, शिक्षित, गृहासक्त तथा अकुशल प्रबंधक होते हैं।[40]

मीन

इसका स्वरूप दो ऐसी मछलियों के जैसा है, जिसकी पूँछ तथा मुख परस्पर मिले हुए होते हैं। यह जल विहारिणी, सौम्य स्वभाव, रात्रि बली, सम, उत्तर दिशा की निवासिनी, बहुकामी, सतोगुणी, स्निग्ध कान्ति, विप्र वर्ण, उभयोदयी, स्त्री लिंग, द्विस्वभाव, दृढ़ शरीर, लघु आकार, जलचर योनि, सजल, जलतत्व, पादहीन, धूम्रवर्ण, शीत प्रकृति, कफ धातु, निःशब्द तथा बहु सन्ततिवाली है। इसका प्रभुत्व पांवों में होता है।[41]

नक्षत्र चरण के द्वारा राशि का ज्ञान

(१) ***मेष*** अश्विनी तथा भरणी नक्षत्र के चारों चरण तथा कृत्तिका नक्षत्र का प्रथम चरण।
(२) ***वृष*** कृत्तिका नक्षत्र के अन्तिम तीन चरण, रोहिणी नक्षत्र के चारों चरण तथा मृगशिरा नक्षत्र के पहले दो चरण।

38 बृहत् पाराशर होराशास्त्र, राशीलीलाध्याय, ५ श्लोक संख्या 17–18, पेज संख्या 35।।
39 बृहत् पाराशर होराशास्त्र, राशीलीलाध्याय, ५ श्लोक संख्या 19–20, पेज संख्या 35।।

40 कुम्भः कुम्भी नरो बभ्रुवर्णो मध्यतनुर्द्विपात्।
द्युवीर्यो जलमध्यस्थो वातशीर्षोदयी तमः।।
शूद्रः पश्चिमदेशस्य स्वामी दैवाकरीः स्मृतः।
– बृहत् पाराशर होराशास्त्र, राशीलीलाध्याय, ५ श्लोक संख्या 21, पेज संख्या 36।।

41 मीनौ पुच्छास्यसंलग्नौ मीनराशिर्दिवाबली।।
जली सत्वगुणाढ्यश्च स्वस्थो जलचरो द्विजः। अपदो मध्यदेही च सौम्यस्थो ह्युभयोदयी।।
सुराचार्याधिपश्चेत्थं राशिनामुदिता गुणाः। त्रिंशद्भागात्मकानां च स्थूलसूक्ष्मफलाय च।।
– बृहत् पाराशर होराशास्त्र, राशीलीलाध्याय, ५ श्लोक संख्या 22–24, पेज संख्या 37।।

(३) ***मिथुन*** मृगशिरा नक्षत्र के अन्तिम दो चरण, आर्द्रा नक्षत्र के चारों चरण तथा पुनर्वसु नक्षत्र के पहले तीन चरण।
(४) ***कर्क*** पुनर्वसु नक्षत्र का अन्तिम एक चरण तथा पुष्य और आश्लेषा नक्षत्र के चारों चरण।
(५) ***सिंह*** मघा तथा पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के चारों चरण तथा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का पहला एक चरण।
(६) ***कन्या*** उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के अन्तिम तीन चरण, हस्त नक्षत्र के चारों चरण तथा चित्रा नक्षत्र के पहले दो चरण।
(७) ***तुला*** चित्रा नक्षत्र के अन्तिम दो चरण, स्वाति नक्षत्र के चारों चरण तथा विशाखा नक्षत्र के पहले तीन चरण।
(८) ***वृश्चिक*** विशाखा नक्षत्र का अन्तिम एक चरण तथा अनुराधा और उत्तराषाढ़ नक्षत्र के चारों चरण।
(९) ***धनु*** मूल तथा पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के चारों चरण तथा उत्तराषाढ़ नक्षत्र का पहला एक चरण।
(१०) ***मकर*** उत्तराषाढ़ नक्षत्र के अन्तिम तीन चरण, श्रवणा नक्षत्र के चारों चरण तथा धनिष्ठा नक्षत्र के पहले दो चरण। चूंकि 'अभिजित्' नक्षत्र की गणना मकर राशि के अंतर्गत ही की जाती है, इसलिए उसके चारों चरण भी मकर राशि के अंतर्गत ही माने जाते हैं।
(११) ***कुम्भ*** धनिष्ठा नक्षत्र के अन्तिम दो चरण, शतभिषा नक्षत्र के चारों चरण तथा पूर्वभाद्रपद के पहले तीन चरण।
(१२) ***मीन*** पूर्वभाद्रपद नक्षत्र का अन्तिम एक चरण तथा उत्तरभाद्रपद एवं रेवती नक्षत्र के चारों चरण।

अक्षर के द्वारा राशि का ज्ञान

विभिन्न नक्षत्रों के चरणाक्षरों के आधार पर ही प्रत्येक राशि के अंतर्गत अक्षरों का विभाजन भी किया जाता है, जिसे निम्न तालिका के अनुसार स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है :

	राशि		चरणाक्षर								
1.	मेष	:	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ
2.	वृष	:	ई	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो
3.	मिथुन	:	का	की	कू	घ	ड.	छ	के	को	हा
4.	कर्क	:	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
5.	सिंह	:	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे
6.	कन्या	:	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
7.	तुला	:	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते
8.	वृश्चिक	:	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
9.	धनु	:	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फा	ढ़ा	भे
10.	मकर	:	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी
			जू	जे	जो	खा	अभिजित् नक्षत्र के चरणाक्षर				
11.	कुम्भ	:	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा
12.	मीन	:	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	ची

राशियों के स्वामी

राशियों के स्वामित्व को लेकर वराहमिहिर ने अपने बृहज्जातक होराशास्त्रम् में लिखा है कि सूर्य तथा चन्द्रमा एक – एक राशि के तथा मंगल, बुध, गुरू, शुक्र और शनि ये पाँचों ग्रह दो – दो राशियों के स्वामी हाते हैं :–

क्षितिजसितज्ञचन्द्ररविसौम्यसितावनिजाः।
सुरगुरूमन्दसौरिगुरवश्च गृहांशकपाः।।
अजमृगतौलिचन्द्रभवनादि नवांशविधि –
–र्भवनसमांशकाधिपतयः स्वगृहात् क्रमशः।।[42]

राहु तथा केतु के छाया ग्रह होने के कारण इन्हें किसी भी राशि का स्वामी नहीं माना जाता है। फिर भी कुछ ज्योतिषाचार्यों ने कन्या राशि पर राहु का तथा मिथुन राशि पर केतु का आधिपत्य माना है जो कि पाराशर होराशास्त्र के अनुसार सार्थक सिद्ध नहीं होता है। राशियों के स्वामित्व को लेकर मुहूर्त्त चिन्तामणि में भी चर्चा की गई है :–

कुजशुक्रसौम्यशशिसूर्यश्चन्द्रजाः कविभौमजीवशनिसौरयो गुरूः।
इह राशिपाः क्रियमृगास्यतौलिकेन्दुभतो नवांशविधिरूच्यते बुधैः।।[43]

श्री वराहमिहिराचार्य ने अपने बृहज्जातक नामक ग्रन्थ में सूर्य चन्द्र को राजा, मंगल को सेनापति, बुध को कुमार, शुक्र–गुरू को सचिव और शनि को सेवक कहा है –

''राजानौ रविशीतगू क्षितिसुतो नेता कुमारो बुधः ।

---

[42] वराहमिहिर, बृहज्जातक होराशास्त्रम्, राशिप्रभेदाध्याय 1, पृष्ठ सं – 12।
[43] मुहूर्त्तचिन्तामणि, विवाह प्रकरण, अध्याय 6, पृष्ठ संख्या –128।

सूरिर्दानवपूजितश्च सचिवौ प्रेष्यः सहस्रांशुजः।।

राशि नाम	स्वामी ग्रह
मेष, वृश्चिक	मंगल
वृष, तुला	शुक्र
मिथुन, कन्या	बुध
कर्क	चन्द्रमा
सिंह	सूर्य
धनु, मीन	गुरू
मकर, कुम्भ	शनि

राशियों के अंग्रेजी तथा अरबी नाम

हिन्दी	अंग्रेजी	अरबी	पर्यायवाची	हिन्दी	अंग्रेजी	अरबी	पर्याय वाची[44]
1. मेष	Aries	हमल	क्रिय	**7. तुला**	Libra	मीजां	जूक
2. वृष	Taurus	सोर	तावुरि	**8. वृश्चिक**	Scorpio	अकरब	कौर्प्य
3. मिथुन	Gemini	जौजा	जितुम	**9. धनु**	Sagittarius	कोस	तौक्षिक
4. कर्क	Cancer	सारतान	कुलीर	**10. मकर**	Capricornis	जद्दी	आकोकेर
5. सिंह	Leo	असद्	लेय	**11. कुम्भ**	Aquarius	दलू	हृद्रोग
6. कन्या	Virgo	सम्बला	पाथोन	**12. मीन**	Pisces	हूत	अन्त्यभ

राशियों का स्वरूप

प्रत्येक राशि काल पुरूष के अंग का एक प्रतीक है।[45] यथा मेष राशि से मस्तक, वृष से मुख आदि। जिस पुरूष या स्त्री के जिन राशियों में अशुभ ग्रह होते हैं, वे उन अंगों को पीड़ा देते हैं। राशियों के स्वरूप को निम्न तालिका से और स्पष्टतया समझा जा सकता है।

राशि स्वरूप

राशि	जाति	संज्ञा	तत्त्व	स्वामी	प्रकृति	प्राकृतिक स्वभाव	शरीर के अंगों का ज्ञान
मेष	पुरूष	चर	अग्नि	पूर्व	उग्र	साहस, अभियान, मित्रहित	मस्तक
वृष	स्त्री	स्थिर	भूमि	दक्षिण	वात	स्वार्थ, सांसारिक, दक्षता	मुख और कपाल
मिथुन	पुरूष	चर	वायु	पश्चिम	उष्ण	शिल्प विद्याव्यसनी	कन्धा और बाहु
कर्क	स्त्री	चर	भूमि	उत्तर	कफ	सांसारिक, उत्पत्ति, कार्यस्थैर्य	वक्ष स्थल और गुर्दा
सिंह	पुरूष	स्थिर	अग्नि	पूर्व	पित्त	साहस, अभिमान, उदारता	हृदय
कन्या	स्त्री	चर	पृथ्वी	दक्षिण	वायु	मान, स्व–उन्नतिशील	पेट
तुला	पुरूष	चर	वायु	पश्चिम	क्रूर	विचार, ज्ञान, राजनीतिज्ञता	नाभि के नीचे का अंश
वृश्चिक	स्त्री	स्थिर	जल	उत्तर	कफ	दंभ, हठ, दृढ़ प्रतिज्ञा	जननेन्द्रिय

---

[44] क्रियतावुरिजितुमकुलीरलेयपाथोनजूककौर्प्याख्याः।
तौक्षिक आकोकेरो हृद्रोगश्चान्त्यभंचेत्थम्।।
– वराहमिहिर, बृहज्जातक होराशास्त्रम्, राशिप्रभेदाध्याय 1, पृ0 सं – 15।

[45] मत्स्यौ घटी नृमिथुनं सगदं सवीणं
चापि नरोऽश्वजघनो मकरो मृगास्यः।
तौली समस्यदहना प्लवगा च कन्या
शेषाः स्वनामसदृशाः खचराश्च सर्वे।।5।।
– वराहमिहिर, बृहज्जातक होराशास्त्रम्, राशिप्रभेदाध्याय 1, पृ0 सं – 12।

धनु	पुरूष	चर	अग्नि	पूर्व	पित्त	अधिकारप्रियता, करूणा, मर्यादा	पैरों की सन्धि तथा जंघाएँ
मकर	स्त्री	चर	पृथ्वी	दक्षिण	वात	उच्च दशाभिलाशी	घुटने
कुम्भ	पुरूष	स्थिर	वायु	पश्चिम	वातपित्त कफ	विचारशीलता	पेट का भितरी भाग
मीन	स्त्री	चर	जल	उत्तर	कफ	दयालुता, दानशीलता	पैर

राशि स्वरूप का प्रयोजन

बारह राशियों के जो गुण, धर्म, स्वरूप, स्वभाव आदि की चर्चा की गई है, उन राशियों में जन्म लिए हुए स्त्री–पुरूष के गुण, धर्म, स्वरूप, स्वभाव आदि प्रायः वैसे ही होते हैं। दो समान स्वभाव वाले प्राणियों में मित्रता तथा असमान स्वभाव वाले प्राणियों में शत्रुता रहती है। अतः विवाह के समय वर–वधू के सम्बन्ध, पारस्परिक मैत्री, शत्रुता, साझेदारी आदि विषयों पर विचार करते समय राशि का स्वरूप अत्यन्त ही उपयोगी सिद्ध होता है।

राशियों के अंग विभाग

द्वादश राशियाँ काल पुरूष का अंग मानी गई हैं। इस कारण से मेष का सिर पर, वृष का मुख पर, मिथुन का वक्षः स्थल पर, कर्क का हृदय पर, सिंह का उदर पर, कन्या का कमर पर, तुला का पेडू पर, वृश्चिक का गुप्तांग पर, धनु का जंघा पर, मकर का घुटनों पर, कुम्भ का पिण्डलियों पर तथा मीन का पाँवों पर अधिकार माना गया है।

राशियों की मैत्री

(1) पृथ्वी तत्व और जल तत्व तथा (2) अग्नि तत्व और वायु तत्व वाली राशियाँ परस्पर मित्र हैं, अतः इन राशियों वाले व्यक्ति में परस्पर मैत्री सम्बन्ध ही होता है।

(1) पृथ्वी तत्व और अग्नि तत्व, (2) जल तत्व और अग्नि तत्व तथा (3) जल तत्व और वायु तत्व वाली राशियाँ परस्पर शत्रृ हैं, अतः इन राशियों वाले व्यक्ति में परस्पर शत्रुता की भावना बनी रहती है।

उपसंहार

आप्त वाक्य पर आँखें मूँद कर विश्वास करना हमारी संस्कृति ने हमें सदा ही सिखाई है। इसलिए हम शंकारहित होकर ऋषियों के वचनामृतों को आज तक ग्रहन करते आए हैं। इस सम्बन्ध में परम्परा–प्रवाह ही साक्षी है। ऐसा क्यों करें? इससे क्या लाभ हो सकता है? आदि प्रश्नों के उत्तर की अपेक्षा के बिना लोग शास्त्रीय मर्यादा एवं दिनचर्या का पालन करते थे। किन्तु आज के इस भौतिकवादी वैज्ञानिक युग में पग–पग पर प्रश्नों की झड़ी लग जाती है। मान लो किसी ने उनकी जिज्ञासाओं को शान्त कर दिया तो भी मनमानी करना लोगों की आदत बन गई हैं। ऋषियों ने व्रत, उपवास, पाठ, यज्ञ आदि का फलश्रुति जरुर दिया है। अपना कष्ट दूर कर मनोभिलषित फल पाने के लिए इन शुभकर्मों में लोग जरुर प्रवृत्त होंगे। श्राद्ध–तर्पणादि ऐसे बहुत सारे कर्म हैं, जिन पर ऋषियों ने फलश्रुति तो दी है किन्तु बाजारी संस्कृति में जीने वाले दीर्घसूत्री लोग शरीरायास न करते हुए अनायास सुख भोगना चाहते हैं जो सर्वथा हास्यास्पद है।

धर्मं प्रसन्नादपि नाचरन्ति पापं प्रयत्नेन समाचरन्ति।

विचित्रामेतधिमनुष्यलोकेऽमृतं परित्यज्य विषं पिबन्ति।।

समयानुसार व्रत, उपवास आदि पुण्यार्जन करने का अवसर आने पर भी अधम मनुष्य धर्म कार्य में प्रवृत्त नहीं होता है किन्तु मोहवश कोशिश करके पाप कर्म में प्रवृत्त हो जाता है। यह संसार की विचित्र गति है जो अमृत छोड़ कर विषपान करता है। इसलिए रामचरितमानस में गोस्वामी जी कहते हैं–

सुख चाहहिं मूढ़ न धर्म रता।

मति थोरी कठोरी न कोमलता।।[46]

आज के मनीषि प्रत्येक कर्म को विज्ञान की कसौटी पर कसना चाहते हैं। वस्तुतः विज्ञान स्थूल पदार्थों का ही परीक्षण कर सिद्धान्त बनाता है। परन्तु जहाँ पर विज्ञान की सीमा समाप्त हो जाती है वहीं से ज्ञान की सीमा प्रारम्भ होती है। स्थूल शरीर के बारे में आज का चिकित्साशास्त्र जानता है और प्रयोग कर सफल भी होता है। परन्तु सूक्ष्म शरीर के बारे में उसे कुछ भी पता नहीं है और वह मानने को तैयार भी नहीं है। दिन–रात वे शल्यचिकित्सा करते हैं परन्तु योगियों द्वारा वर्णित षट्चक्र, अष्टचक्र, सहस्रारि चक्र आदि मनुष्य शरीर में उन्हें नहीं मिलते हैं। इडा, पिंगला एवं सुषुम्ना नाड़ी उनके लिए सामान्य नसों के बराबर हैं। वह उनका महत्त्व भी नहीं जानते। किन्तु ऋषियों ने शरीर विज्ञान के सम्बन्ध में जो गूढ़ रहस्य हजारों वर्ष पहले कह दिया है वह आज के अध्येता के लिए अनुसन्धान का विषय बनकर रह गया है।

46 रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड कलिधर्मवर्णन, पृ0 सं0 364।

अगर आप से कोई कहता है कि एक साल से अन्न–जल ग्रहण नहीं करता हूँ। मल–मूत्र त्याग तो बिल्कुल नहीं, यह सुनकर कोई भी चकित होगा। परन्तु आध्यात्म–साधनारत योगी आश्चर्य नहीं करेगा। क्योंकि योग–बल से ईश्वर की अनुकम्पा से सब कुछ सम्भव हो सकता है। परन्तु वैज्ञानिक लोग इस बात को बिल्कुल नहीं मानते। वे तो तुरन्त कहेंगे कि ये कभी सम्भव नहीं है। परन्तु यह केवल ऐसा सम्भव ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वस्त चमत्कृत सत्य सामने प्रस्तुत है–

रक्षा वैज्ञानिक भी नहीं जान सके माताजी का राज[47]

पिछले 65 साल से बिना कुछ खाए–पिए रहने का दावा करने वाले गुजरात के चुनरी वाले बाबा उर्फ माताजी उर्फ प्रहलाद जानी विज्ञान के लिए अबूझ पहेली बन गए हैं। रक्षा विभाग की शोध संस्था और देश के नामी चिकित्सक भी माताजी के बिना खाए–पीए रहने का रहस्य नहीं जान सके। अगर इस रहस्य से पर्दा उठ जाता है तो अंतरिक्ष यात्रियों को खान–पान का सामान नहीं ले जाना पड़ेगा। साथ ही भुखमरी की समस्या से निपटा जा सकेगा। माता जी की खासियत यह है कि वे मल–मूत्र नहीं त्यागते। जबकि मूत्र विसर्जन नहीं करने पर मौत संभव है। माताजी की इस सिद्धि से दो साल पहले पूर्व राष्ट्रपति ए. पी. जे. अब्दुल कलाम को भारतीय प्रबंध संस्थान में अवगत कराया गया था। कलाम की ही पहल पर उनकी जाँच की प्रक्रिया शुरु की गई। नई दिल्ली के रक्षा शोध एवं विकास संगठन ;डिपासद्ध ने गुजरात के 32 चिकित्सकों की मदद से गत दो सप्ताह तक अहमदाबाद के स्टर्लिंग अस्पताल में माताजी का परीक्षण किया। इस दौरान उन पर लगातार सीसीटीवी कैमरों के जरिए नजर रखी गई। जिसमें उनका एमआरआई, सीटी स्केन, ईसीजी, सोनोग्रापफी आदि का परीक्षण कर उनके शरीर की एक–एक हलचल पर नजर रखी गई लेकिन सब रिपोर्ट सामान्य पाई गई।

वेद मन्त्रों को श्रौत से अतिरिक्त विविध पृष्ठभूमि पर जोड़कर अर्थ करना आज के मनीषियों की विशिष्टता है। इस प्रकार धर्मिक कृत्यों का वैज्ञानिक पक्ष क्या है, उसको भी बखान करने में पीछे नहीं रहते। धर्मिक कृत्यों तथा वेद मन्त्रों का अगर कोई धर्म संगत अर्थ को प्रतिपादन करता है तो हमें कोई आपत्ति नहीं हैं। इस बात को मनु भी स्वीकार करते हैं–

आर्षं धर्मोपदेशंच वेदशास्त्राविरोधिना।

यस्तर्कणानुसन्धत्ते स धर्मो वेदनेतरः।।[48]

किन्तु इन क्रिया–कलापों के महत्त्व का प्रतिपादन कर अपने आप को धन्य मान लेना केवल आत्मवचन मात्र होगा। जब तक इन सत्कर्मों को हम जीवन में नहीं उतारेंगे या मंच और माईक तक ही सीमित रखेंगे, उससे कोई लाभ नहीं होगा। कर्म फलदाता ईश्वर है। हम कितने सात्विक भाव से प्रेरित होकर कितना शुद्ध मन से कर्म करते हैं यह परमपिता को साक्षी मानकर करना चाहिए। लोगों को दिखाने के लिए नहीं अपितु ईश्वर प्रीत्यर्थ करना चाहिए, क्योंकि जीव के कर्मफलदाता ईश्वर हैं। अतः उसको प्रसन्न करने के लिए मन–वाणी तथा कर्म हमेशा पवित्रा रख कर, छल–कपट से दूर रहकर धर्मिक कृत्य करना चाहिए। इससे अत्यन्त आन्तरिक सुखानुभूति होगी। इसको अनुष्ठाता ही ठीक अनुभव कर सकता है। अतः जीवन में संस्कारों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका है जो सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक अविच्छिन्न धरा के रूप में प्रवाहित होते हुए हम तक पहुँची है। अच्छे संस्कारों के लिए अच्छे कर्मों का संपादित होना भी उतना ही जरूरी है। और अच्छे कर्म तभी संभव है जब हम किसी विषय का ज्ञान सही तरीके से करें। आज के ज्योतिषी तो केवल सही ज्ञान की परवाह किये बगैर ही किसी भी नतीजे को लोगों के सामने रख देते हैं। जिसके फलस्वरूप ऐसा होता है कि लोगों का उक्त विषय से विश्वास उठता चला जाता है। इसलिए लोगों के विश्वास ज्योतिष में बनी रही उसलिए इस शोध के आधार पर मैंने इसके विषय को अत्यन्त ही सरल भाव में प्रस्तुत करने का एक प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

01.	भारतीय ज्योतिष विज्ञान	रविन्द्र कुमार दूबे	प्रतिभा प्रतिष्ठान	प्रथम	2002	1661, दखनीराय स्ट्रीट, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली।
02	भारतीय ज्योतिष	डॉ नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य	भाररतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन	नवम	1981	बी 45/47, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।
03.	भृगु संहिता फलित प्रकाश	मू0 लेखक दृ भृगु ऋषि व्याख्याकार – राजेश दीक्षित	देहाती पुस्तक भण्डार			चावड़ी बाजार, दिल्ली ।
04.	बृहज्जातकम्	व्या0 – केदारदत्त जोशी	मोतीलाल बनारसीदास		1985	
05.	बृहज्ज्योतिःसार	भाषानुवादक – पं0 श्री सूर्यनारायण सिद्धान्ती	तेजकुमार बुक डिपो प्रा लिमिटेड	उन्नीसवाँ	2000	पोस्ट बॉक्स 85, 1 त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ
06.	बृहज्ज्यौतिषसारः	सम्पादक – श्री रूप नारायण शर्मा	ठाकूर प्रसाद पुस्तक भण्डार			कचौड़ीगली, वाराणसी।
07.	चमत्कार चिन्तामणि	पं0 राजाराम ज्योतिषी फर्रूखाबाद	तेजकुमार बुक डिपो प्रा लिमिटेड	चतुर्थ संशोधत संस्करण	2003	पोस्ट बॉक्स 85, 1 त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ
08.	पराशर स्मृति	पृ0 गुरूप्रसाद शर्मा द्वारा भाषानुवादित	बाबू हरिनारायण वर्मा बुकसेलर	प्रथम संस्करण	1923 ई0	नागेश्वर प्रेस, बनारस
09.	Astrology Yoga Collections	Internet	Transmitted in 2009			www.Wikipedia.org

47 आभार–दैनिक जागरण, नई दिल्ली 8 मई 2010

48 मनुस्मृति अध्याय, 12 श्लोक सं0 106, पृ0 सं0 179।

10.	भारतीय ज्योतिष	नेमिचन्द शास्त्री	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन	नवम संस्करण	1981	भारतीय ज्ञानपीठ, बी 45/47, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।
11.	भृगु संहिता फलित प्रकाश	मू0 लेखक दृ भृगु ऋषि व्याख्याकार – प्रेम कुमार शर्मा	देहाती पुस्तक भण्डार		2009	चावड़ी बाजार, दिल्ली ।
12.	अष्टाध्यायी	पाणिनी	निर्णय सागर प्रेस			रामलाल कपूर ट्रस्ट, अमृतसर, सोनीपत
13.	अथर्ववेद	सायण भाष्य, शंकर पांडुरंग पंडित	निर्णय सागर प्रेस		1962	विश्व विद्यालय शोध संस्थान, होशियारपुर।
14.	अथर्ववेद संहिता	सातवलेकर श्रीपाद दामोदर	स्वास्थ्य मंडल		1950	पारडी, सूरत
15.	अत्ति स्मृति	मोर मनसुख राय	गुरू मंउल आश्रम		1953	कलकत्ता
16.	अभिज्ञान शाकुन्तल	कालीदास	मोतीलाल बनारसी दास		1973	वाराणसी
17.	अन्त्यकर्म दीपक	नित्यानन्द पर्वतीय	चौखम्बा संस्कृत संस्थान			बनारस
18.	आपस्तम्ब धर्मसूत्र	डॉ0 उमेश चन्द्र पाण्डेय	चौखम्बा		1971	बनारस
19.	आपस्तम्ब–स्मृति	मनसुखराय मोर	गुरूमण्डल आश्रम		1953	कलकत्ता